



Allah Pak Se Mulaqat ka Shauq (Hindi)

सफ़हात: 21

अल्लाह पाक से मुलाक़ात का शौक़



"अल्लाह पाक से मुलाक़ात" के माना

04

दीदारे इलाही की दुआ

07

मुलाक़ात के शाइकीन के 9 इरशादात

11

अपने मरने की दुआ करना कैसा ?

18

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अक्तर क़ादिरि रज़वी

دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ
الْعَالِيَةِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ، وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى خَاتَمِ النَّبِيِّينَ،
أَمَّا بَعْدُ، فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ، بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ۔

अल्लाह पाक से मुलाक़ात का शौक़

दुआए अत्तार : या रब्बल मुस्तफ़ा ! जो 20 सफ़हात का रिसाला "अल्लाह पाक से मुलाक़ात का शौक़" पढ़ या सुन ले उस से हमेशा के लिए राजी हो जा और उसे अपनी मुलाक़ात का शौक़ अता फ़रमा और मां बाप समेत उस को बे हिसाब बरख़्श दे । **اٰمِيْن بِجَا لَا خَاتَمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्तफ़ा **صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** : "जिसे येह पसन्द हो कि अल्लाह पाक की बारगाह में पेश होते वक़्त अल्लाह पाक उस से राजी हो उसे चाहिये कि मुझ पर कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़े ।"

(फ़रदुस الأخبار بمأثور الخطاب ج ٢ ص ٢٨٤ حديث ٦٠٨٣)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

मैं मौत का फ़रिश्ता हूँ (वाक़िआ)

मलकुल मौत हज़रते इज़राईल **عَلَيْهِ السَّلَام** एक नेक शख्स से मिले और उसे सलाम किया । नेक शख्स ने सलाम का जवाब दिया । मलकुल मौत **عَلَيْهِ السَّلَام** ने फ़रमाया : "मुझे तुम से एक ज़रूरी काम है ।" नेक शख्स ने अर्ज की : इर्शाद फ़रमाइये । मलकुल मौत **عَلَيْهِ السَّلَام** ने फ़रमाया : येह मेरे और तुम्हारे दरमियान एक राज़ है । नेक शख्स ने अपना सर क़रीब कर दिया । हज़रते मलकुल मौत **عَلَيْهِ السَّلَام** ने (कान में) फ़रमाया : "मैं मौत का फ़रिश्ता हूँ ।" नेक शख्स ने कहा : खुशआमदीद ! (WEL COME) आप ने काफ़ी अर्से इन्तिज़ार करवाया, अल्लाह पाक की क़सम ! मुझे रूए ज़मीन पर आप की मुलाक़ात से ज़ियादा किसी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझे पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा, अल्लाह पाक उस पर दस रहमतें भेजता है। (स्म)

की मुलाकात पसन्द न थी। मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : तुम जिस काम के लिए निकले हो उस को पूरा कर लो। उस नेक शख्स ने जवाब दिया : अल्लाह पाक की मुलाकात से बढ़ कर अब मुझे कोई शै पसन्द नहीं। मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : “तुम किस हालत में मरना पसन्द करोगे ?” नेक शख्स ने अर्ज किया : क्या आप को इस की इजाजत है ? हज़रते मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : मुझे इसी बात का हुक्म दिया गया है। उस नेक शख्स ने अर्ज की : मैं वुजू कर के नमाज़ पढ़ता हूँ, आप सज्दे में मेरी रूह कब्ज़ कर लीजियेगा। चुनान्चे मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने सज्दे की हालत में उस की रूह कब्ज़ फ़रमा ली।

(احياء العلوم ج ٥ ص ٤٢) (एहयाउल इलूम (उर्दू), जि. 5, स. 529 बि तग़य्युरिन)

अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِيْنَ بِجَاهِ خَاتِمِ النَّبِيِّنَ صَلَّی اللّٰهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

है ख्वाहिशे विसाले दरे यार ऐ हसन आए न क्यूँ असर को मेरी आरजू पसन्द

(जौक़े नात, स. 127)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰهُ عَلَی مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! रब्बे का एनात से मुलाकात का शौक हमारे अन्दर काश पैदा हो जाए, सहाबिए रसूल हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मस्रूद رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह पाक की मुलाकात से बढ़ कर मोमिन के लिये कोई राहत नहीं।"

(الزهد لابن المبارك ص ٤٧ قول نمبر ١٤, 56, (शर्हुस्सुदूर (उर्दू), स. 56)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰهُ عَلَی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढ़े, अल्लाह पाक उस पर सौ रहमतेँ नाज़िल फ़रमाता है। (ज़रान)

"अल्लाह पाक से मुलाकात" के माना

"बुखारी शरीफ़" में है : सरवरे काएनात صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इशार्दि फ़रमाया : जो अल्लाह पाक से मुलाकात पसन्द करता है, अल्लाह पाक भी उस की मुलाकात को पसन्द फ़रमाता है और जो अल्लाह पाक से मुलाकात को ना पसन्द करता है, अल्लाह पाक भी उस की मुलाकात को ना पसन्द फ़रमाता है। येह सुन कर उम्मुल मुअमिनीन हज़रते बीबी आइशा सिदीका رَضِيَ اللهُ عَنْهَا या बाज़ पाक बीबियों ने अर्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! हम मौत को ना पसन्द करती हैं। तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : येह मतलब नहीं। मतलब येह है कि जब मोमिन की मौत यक़ीनी तौर पर करीब हो जाती है तो उसे अल्लाह पाक की खुशनूदी और इनायत की खुश ख़बरी दी जाती है तो उस के आगे जो कुछ है उस से ज़ियादा कोई चीज़ प्यारी नहीं होती, अब वोह अल्लाह पाक से मुलाकात पसन्द करता है और अल्लाह पाक उस की मुलाकात पसन्द फ़रमाता है और जब काफ़िर की मौत करीब होती है तो उसे अल्लाह पाक के अज़ाब व सज़ा की ख़बर दी जाती है। उस वक़्त उस के आगे जो कुछ है उस से ज़ियादा कोई चीज़ ना पसन्द नहीं होती तो वोह अल्लाह पाक की मुलाकात ना पसन्द करता है और अल्लाह पाक उस की मुलाकात को ना पसन्द फ़रमाता है।

(بخاری ج 4 ص ۲۴۹ حدیث ۶۵۰۷)

मौत को ना पसन्द करने वाले

हज़रते इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : बाज़ लोग मौत को कभी कभार याद कर लेते हैं और जब उसे याद करते हैं तो उसे (यानी मौत को) ना पसन्द समझते हैं क्यूं कि वोह दुनिया में मशगूल

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहक़ीक़ वोह बदबख़्त हो गया । (उ०)

होते हैं, तो मौत को ना पसन्द करते हुए याद करना **अल्लाह** पाक से मज़ीद दूर कर देता है । लेकिन कुछ लोग **अल्लाह** पाक की तरफ़ मुकम्मल तौर पर मुतवज्जेह हो कर अपने गुनाहों से तौबा कर लेते हैं, मौत की याद तौबा के मुकम्मल होने के साथ उन के दिलों में **अल्लाह** पाक का ख़ौफ़, बारगाहे इलाही में हाज़िरी की तय्यारी और वफ़ादारी में इज़ाफ़ा कर देती है और वोह शख्स दुनिया में मशगूल होने की वजह से मौत को ना पसन्द नहीं करता बल्कि ज़ादे राह (यानी नेक आमाल) की कमी और आखिरत की तय्यारी न होने की वजह से मौत को ना पसन्द करता है और येह (मौत को) ना पसन्द जानना **अल्लाह** पाक की **मुलाकात** को ना पसन्द करना नहीं और येह बुरा भी नहीं है, बल्कि वोह शख्स आखिरत की तय्यारी के लिये दुनियावी ज़िन्दगी चाहता है और इसी महबबत के साथ उसे इसी (आखिरत की) तय्यारी में मौत आ जाए तो मौत उसे **अल्लाह** पाक की **मुलाकात** और उस के जवारे रहमत की तरफ़ ले जाएगी । **अल्लाह** पाक की पहचान रखने वाला हमेशा मौत को याद करता है, क्यूं कि मौत महबूब से मुलाकात का वादा है और मुहिब (यानी महबबत करने वाला), महबूब (यानी जिस से महबबत की गई उस) की **मुलाकात** के वक़्त को कभी नहीं भूल सकता ।

(लुबाबुल एह्या (उर्दू), स. 380)

जान तो जाते ही जाएगी क्रियामत येह है

कि यहां मरने पे ठहरा है नज़ारा तेरा

(हदाइके बख़्शिश शरीफ़, स. 21)

मौत से एक साल पहले

उम्मुल मुअमिनीन हज़रते बीबी आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللهُ عَنْهَا से रिवायत है कि **अल्लाह** पाक जब किसी बन्दे से भलाई का इरादा करता है तो उस के मरने

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुबह व शाम दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क्रियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (مجمع الزوائد)

से एक साल पहले एक फ़रिश्ता उस पर मुक़र्रर कर देता है जो उसे सीधे रास्ते पर लगाता रहता है हत्ता कि वोह शख्स भलाई पर मर जाता है, लोग उस के बारे में कहते हैं : फुलां बन्दे ने भलाई पर मौत पाई। जब ऐसा बन्दा मरने लगता है तो अपने आखिरत के इन्आमात देख कर उस की रूह निकलने में जल्दी करती है पस उस वक़्त वोह अल्लाह पाक की मुलाकात को पसन्द करता है और अल्लाह पाक उस की मुलाकात पसन्द फ़रमाता है और जब अल्लाह पाक की तरफ़ से किसी के लिये बुराई मुक़दर हो चुकी होती है तो अल्लाह पाक मरने से एक साल पहले उस पर एक शैतान मुसल्लत (यानी हावी) कर देता है जो उसे मुसल्लसल गुमराह करता और भटकाता रहता है यहां तक कि वोह बद तरीन हालत में मर जाता है। जब वोह मौत के वक़्त अपने लिये तय्यार (किये हुए) अज़ाब देखता है तो उस की रूह उसे ना पसन्द करते हुए उलट पुलट होने लगती है, उस वक़्त वोह अल्लाह पाक की मुलाकात को ना पसन्द करता है और अल्लाह पाक भी उस की मुलाकात को ना पसन्द रखता है।

(کتاب ذکر الموت مع موسوعة ابن أبي الدنيا ج 5 ص ۴۳۴ حدیث ۱۵۷, 79, 78 تا, (शर्हुस्सुदूर (उर्दू), स. 78

तू हसन को उठा हसन¹ कर के

हो मअल खैर खातिमा² या रब

(जौके नात, स. 87)

शर्हे कलामे हसन रज़ा हसन : या अल्लाह पाक ! तू हसन रज़ा खान हसन को नेक और अच्छा बन्दा कर के दुनिया से उठा, इस को भलाई वाली मौत नसीब फ़रमा।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ❀❀❀ صَلَّی اللہُ عَلَی مُحَمَّدٍ

1 : नेक और अच्छा। 2 : भलाई वाली मौत।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

दीदारे इलाही की दुआ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! अपनी दुआ में अर्ज करो !
اللَّهُمَّ ارْزُقْنِي لَذَّةَ النَّظَرِ إِلَى وَجْهِكَ الْكَرِيمِ، وَالسُّوقَى إِلَى لِقَائِكَ
अपने दीदार की लज़्ज़त और अपनी मुलाकात का शौक अता फ़रमा।

(नوادर الاصول ج ۲ ص ۴۵، كنز العمال ج ۱ جزء ۲ ص ۸۴ حديث ۳۶۹۸)

तसव्वुफ़ की एक तारीफ़

सूफ़ियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ फ़रमाते हैं : दुनिया से मुंह फेरते हुए उसे छोड़ कर आखिरत में अल्लाह पाक से मुलाकात के लिये ख़ूब कोशिश करने का नाम तसव्वुफ़ है। (अल्लाह वालों की बातें, जि. 3, स. 67)

शौक़े मुलाकात पैदा कीजिये

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह पाक से मुलाकात यक़ीनन मरने के बाद ही होगी, !फ़लत में डालने वाली दुनिया से मुंह मोड़ कर नेक आमाल कर के रिज़ाए इलाही पाने की सूरत में ज़िन्दगी गुज़ारने वाला सआदत मन्द आशिक़े रसूल मौत को पसन्द करेगा क्यूं कि उस ख़ुश नसीब के लिए उस के नेक कामों का बदला, जन्नत और उस की आला नेमतें होंगी और सब से बड़ी नेमत अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त का दीदार है। काश ! सद करोड़ काश ! हमारे अन्दर भी रब्बे का एनात से मुलाकात का शौक़ पैदा हो जाए। सिरातुल जिनान जिल्द पहली सफ़्हा 169 पर है : "अल्लाह पाक की मुलाकात का शौक़ मक्बूल बन्दों का तरीक़ा है।

हिदायत की अलामत

इरशादे हज़रते सुफ़यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ : हिदायत की अलामात में सब से वाज़ेह अलामत अल्लाह करीम से मुलाकात को पसन्द करना है, जब बन्दा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा, मैं क्रियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (عبر ۱)

अल्लाह करीम से मिलने को पसन्द करता हो तो वोह भलाई की इन्तिहा को पहुंच जाता है। (अल्लाह वालों की बातें, जि. 9, स. 461, कौल नम्बर : 14035)

ऐशो राहत का दिन

बहुत बड़े ताबेई बुजुर्ग हज़रते हसन बसरी رَحْمَةُ اللہِ عَلَیْہِ फ़रमाते हैं : "मोमिन का सुकून सिर्फ़ अल्लाह पाक से मुलाक़ात में है और जिस का सुकून अल्लाह पाक से मुलाक़ात में हो तो उस के लिये मौत का दिन खुशी, राहत, अम्म, इज़्जतो बुजुर्गी का दिन है।" (एहयाउल इलूम (उर्दू), जि. 5, स. 523)

हज़रते उक़्बा बिन मुस्लिम رَحْمَةُ اللہِ عَلَیْہِ ने फ़रमाया : "अल्लाह पाक को बन्दे की इस आदत से बढ़ कर कोई चीज़ ज़ियादा पसन्द नहीं है जिस में वोह अल्लाह पाक की मुलाक़ात को पसन्द करता है।"

(मुकाशफ़तुल कुलूब (उर्दू), स. 360, ۲۷۹ قول نمبر ۹۴)

मग़ि़रत की उम्मीद

अल्लाह पाक क्रियामत के दिन मोमिनों से इश्शद फ़रमाएगा : क्या तुम्हें मेरी मुलाक़ात पसन्द है ? वोह कहेंगे : हां, ऐ हमारे रब ! तो अल्लाह पाक इश्शद फ़रमाएगा : क्यूं ? वोह जवाब देंगे : हम तेरे अफ़वो दरगुज़र (यानी गुनाहों की मुआफ़ी देने) और तेरी मग़ि़रत की उम्मीद रखते थे। अल्लाह पाक इश्शद फ़रमाएगा : "मैं ने तुम्हारे लिये अपनी मग़ि़रत को वाजिब कर दिया।"

(एहयाउल इलूम (उर्दू), जि. 5, स. 765)

जन्नत में आक्रा का पड़ोसी, बन जाए अत्तार इलाही

मौला ! अज़ पए कुल्बे मदीना, या अल्लाह ! मेरी झोली भर दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 123)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ❀❀❀ صَلَّی اللہُ عَلَی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझे पर दुरुदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया । (طبرانی)

फूल सूंघने में रूह क़ब्ज़ हो गई

सहाबी इब्ने सहाबी हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللہُ عَنْہُمْ फ़रमाते हैं : मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने बारगाहे इलाही में अर्ज़ की : या **अल्लाह** ! तेरे बन्दे हज़रते इब्राहीम खलीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام मौत से घबरा गए हैं । **अल्लाह** पाक ने इरशाद फ़रमाया : उन से कह दो, जब दोस्त से **मुलाकात** किये लम्बा अर्सा गुज़र जाए तो **मुलाकात** का शौक बढ़ जाता है । आप عَلَيْهِ السَّلَام के पास यह पैग़ाम पहुंचा तो अर्ज़ की : ऐ पाक परवरदिगार ! मैं तेरी **मुलाकात** का शौक रखता हूं । चुनान्वे मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने आप को एक फूल पेश किया, आप عَلَيْهِ السَّلَام ने वोह सूंघा तो इसी दौरान उन्होंने ने आप की रूहे मुबारक क़ब्ज़ फ़रमा ली ।

(शर्हुसुदूर (उर्दू), स. 116)

हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام

हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने **अल्लाह** पाक से **मुलाकात** के शौक पर मुश्तमिल यह दुआ फ़रमाई, जैसा कि पारह 13 **सूरए यूसुफ़** आयत 101 में है :

आसान तरजमए क़ुरआन कन्ज़ुल

इरफ़ान : ऐ मेरे रब ! बेशक तू ने मुझे एक सल्तनत दी और मुझे ख्वाबों की ताबीर निकालना सिखा दिया । ऐ आस्मानों और ज़मीन के बनाने वाले ! तू दुनिया और आख़िरत में मेरा मददगार है, मुझे इस्लाम की हालत में मौत अत्ता फ़रमा और मुझे अपने कुर्ब के लाइक बन्दों के साथ शामिल फ़रमा ।

رَبِّ قَدْ آتَيْتَنِي مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِي
مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
إِنَّكَ أَنْتَ وَلِيّ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ
تَوَفَّنِي مُسْلِمًا وَأَلْحِقْنِي
بِالصَّالِحِينَ (101)

(अल्लाह वालों की बातें, जि. 2, स. 518, क़ौल नम्बर 2658)

فرمانے مستفاد : **صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

"दीदारे इलाही" के नव हुरूफ़ की निस्बत से

मुलाक्रात के शाइकीन के 9 इरशादात

(1) सहाबिए रसूल हजरते अबू जर गिफारी رضي الله عنه की वफात का वक़्त जब करीब आया तो फ़रमाया : "ऐ मौत ! जल्दी आ, क्यूं कि मैं अल्लाह पाक से मुलाक़ात को पसन्द करता हूं।" (تبيين المغترين ص ۵۹)

दे उस को दमे नज़अ अगर हूँ भी सागर

मुंह फेर ले जो तिश्नए दीदार तेरा हो

(ज़ोक्रे नात, स. 210)

अल्फ़ाज़ व मअानी : दमे नज़्अ : जान निकलते वक़्त । सागर : जाम,
प्याला । तिश्नए दीदार : दीदार का प्यासा ।

शर्हे कलामे हसन रज़ा हसन : یا رسوللّٰہ ﷺ ! کبر میں چूंکی
 آپ کی جیয়ারت کی سآادت इनायत होती है लिहाज़ा ऐसा आशिक़ जो आप
 के शरबते दीदार का प्यासा हो उस को इन्तिक़ाल के वक़्त जन्मती हूर भी अगर
 छलक्ता ज़ाम पेश करे तो वोह क़बूल न करे ।

(2) सहाबिए रसूल हज़रते अबू दरदा رضي الله عنه ने फ़रमाया : “अपने रब्बे करीम की मुलाक़ात के लिये मैं मौत को पसन्द करता हूँ।”

(طبقات ابن سعد ج ۷ ص ۲۷۵، 58، س.، شہرہ سید (اردو))

अपनी मुलाक़ात नसीब फ़रमा

(3) अज़ीम ताबेई बुज़ुर्ग हज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ अक्सर जो दुआ मांगते उस तवील दुआ में यह अल्फ़ाज़ भी होते : "ऐ अल्लाह पाक ! मरने से

फ़रमाने मुस्तफ़ा عَلَيْهِ السَّلَام : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्ज़ूस तरीन शख्स है। (सुन्दराम)

पहले हमें तौबा की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और (आखिरत की) पकड़ से पहले सलामती व आफ़ियत के साथ अपनी मुलाकात नसीब फ़रमा। ऐ ज़मीनो आसमान के मालिक ! हमें अपनी तरफ़ रखत और अपना ख़ौफ़ इनायत फ़रमा।"

(अल्लाह वालों की बातें, जि. 2, स. 549, क्रौल नम्बर 2758)

सज्दे में वफ़ात

(4) हज़रते सफ़वान बिन सुलैम رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ की सज्दे की हालत में वफ़ात हुई। आप رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ दुआ में येह अर्ज करते : ऐ अल्लाह ! मुझे तेरी मुलाकात पसन्द है लिहाज़ा तू भी मुझ से मुलाकात को पसन्द फ़रमा।

(एहयाउल इलूम (उर्दू), जि. 5, स. 373)

बीबी शावाना की दुआ

(5) अल्लाह पाक की वलिय्या हज़रते बीबी शावाना رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهَا यूँ दुआ फ़रमातीं : इलाही ! मुझे तेरी मुलाकात का बहुत शौक़ है और तेरी तरफ़ से मिलने वाले सवाब की बहुत ज़ियादा उम्मीद है। तू ऐसा करीम है कि तेरी बारगाह में उम्मीदवार मायूस नहीं होते।

(एहयाउल इलूम (उर्दू), जि. 5, स. 386)

अल्लाह की रहमत से येह मायूस नहीं है

हो जाएगा अन्तार की बख़्शिश का बहाना

(वसाइले बख़्शिश, स. 354)

वफ़ात के वक़्त वज्द

(6) हज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ से अर्ज की गई : "हज़रते अबू सईद अहमद बिन ईसा ख़र्राज़ رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ पर इन्तिकाल के वक़्त काफ़ी वज्द त़ारी था।" आप ने

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह पाक के जिक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الإيمان)

फ़रमाया : हो सकता है कि उन की रूह अपने रब से मुलाकात के शौक में जिसम से जुदा होना चाह रही हो।” (एहयाउल इलूम (उर्दू), जि. 5, स. 577)

हज़रत मौलाना शाह अब्दुल अलीम आसी गाज़ीपुरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ शौके दीदारे मुस्तफ़ा में फ़रमाते हैं :

अब तो फूलें न समाएंगे कफ़न में आसी

है शबे गोर भी उस गुल से मुलाकात की रात

अल्फ़ाज़ व मअ़ानी : शबे गोर : क़ब्र की रात। गुल : फूल। इस शेर में "गुल" से मुराद ज़ाते मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ है।

जो सुतून को पहले हाथ लगा दे

(7) चन्द औलिया व इलमा एक जगह जमा हुए और मौत के बारे में गुफ़्तगू फ़रमाने लगे। उन में से एक ने फ़रमाया : "अगर हज़रते मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام तशरीफ़ ले आएँ और फ़रमाएँ कि तुम में से जो भी सब से पहले फ़ुलां सुतून को हाथ लगा दे वोह फ़ौत हो जाएगा। तो मुझे उम्मीद है कि अल्लाह पाक से मुलाकात का शौक होने की वजह से मैं तुम सब पर सबक़त (यानी पहल) हासिल कर लूंगा।" यानी फुरती के साथ आगे बढ़ कर सुतून को हाथ लगा दूंगा।

(अल्लाह वालों की बातें जि. 6, स. 160, क्रौल नम्बर 8023)

मैं मौत को इख़्तियार करूंगा

(8) हज़रते अब्दुल्लाह बिन अबू ज़करिय्या رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते थे : अगर मुझे इख़्तियार दिया जाए कि अल्लाह पाक की फ़रमां बरदारी के साथ 100 साल ज़िन्दा रहो या आज ही फ़ौत हो जाऊं तो मैं अल्लाह पाक, उस के आखिरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ और नेक बन्दों से मुलाकात के शौक में मौत को इख़्तियार करूंगा।” (حلیة الأولیاء ج ۵ ص ۱۷۲ قول نمبر ۶۷۳۳)

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सौ बार दुरुदे पाक पढ़ा उस के दो सौ साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (टिप्पणी)

न घबरा मौत से अत्तार बरज़ख़ में तू मिल लेना

वहां ग़ौसुल वरा होंगे, वहां अहमद रज़ा होगा

(वसाइले बख़्शिश, स. 184)

क्या तुम मुलाक़ात को पसन्द नहीं करोगे ?

(9) हज़रते अबू अब्दुल्लाह साजी रَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : अगर मुझे पूरी ज़िन्दगी ऐसी हलाल नेमतों से लुफ़्त अन्दोज़ होने का इख़्तियार दिया जाता जिन के बारे में बरोजे क्रियामत सुवाल भी नहीं होगा और अभी मरने का इख़्तियार दिया जाता तो मैं अभी मरना क़बूल करता। जिस की फ़रमां बरदारी करते हो क्या तुम उस (यानी अल्लाह पाक) की मुलाक़ात पसन्द नहीं करोगे ?

(حلیة الأولیاء ج ۹ ص ۳۲۳ قول نمبر ۱۴۰۱۹ بتغیر قلیل)

अल्लाहु रब्बुल इज़ज़त की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो। اَمِنْ بِجَاهِ خَاتِمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

शौक़ अपनी मुलाक़ात का दे खुदा

अपनी उल्फ़त में मुझ को गुमा दे खुदा

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّد

मुलाक़ाते इलाही का शौक़ पैदा करने का तरीक़ा

ऐ आशिक़ाने रसूल ! हज़रते इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली रَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : अक्लमन्दी का तकाज़ा येह है कि ऐसी हस्ती से महब्बत की जाए जो हम से कभी दूर न होगी। दुनिया से महब्बत करने वाला अल्लाह पाक की मुलाक़ात को ना पसन्द करता है लेकिन मौत आने पर उसे

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : मुझ पर दुरुद शरीफ़ पढ़ो, अल्लाह पाक तुम पर रहमत भेजेगा। (अिन عدی)

अपनी प्यारी दुनिया से जुदा होना पड़ता है और महबूब (यानी प्यारे) से जुदाई की तकलीफ़ हर शाख्स को उस की महबबत के मुताबिक़ होती है। (यानी जिस से जितनी ज़ियादा महबबत हो उस की जुदाई से उसे उतनी ही ज़ियादा तकलीफ़ होगी) (एहयाउल उलूम (उर्दू), जि. 4, स. 607) जब बन्दा जान लेता है कि आख़िरत की सज़ादत तो बस अल्लाह पाक से मुलाकात है, जो इस (मुलाकात के शरफ़ के तअल्लुक़) से पर्दे और रुकावट में रहा वोह महरूम है। और अल्लाह पाक की मुलाकात से दूर करने वाली चीज़ें ख्वाहिशात के पीछे चलना, फ़ानी (यानी बहुत जल्द ख़त्म हो जाने वाली) दुनिया से दिलचस्पी और इन की महबबत में गिरिफ़्तार होना है जिन से दूरी लाज़िम है, अल्लाह पाक की मुलाकात का ज़रीआ येही है कि इस दुनिया की रंगीनियों से दिली तअल्लुक़ तोड़ दिया जाए और ज़िक़्रे इलाही पर हमेशगी के ज़रीए अल्लाह पाक से उन्सिय्यत (यानी लगाव) के लिये उस की तरफ़ मुतवज्जेह रहा जाए और उस से महबबत की जाए। (एहयाउल उलूम (उर्दू), जि. 4, स. 15 मुलाख़ख़सन) इन्सान के लिये हक़ीक़ी सज़ादत व काम्याबी इस में है कि वोह अल्लाह पाक से मुलाकात को अपना मक़्सद, आख़िरत को अपना मुस्तक़िल (यानी PERMANENT) ठिकाना, दुनिया को आरिज़ी (यानी TEMPORARY) ठहरने की जगह, बदन को सुवारी और आज़ा को अपना ख़ादिम (यानी अल्लाह पाक की फ़रमां बरदारी पर मदद करने वाला) तसव्वुर करे।

(एहयाउल उलूम (उर्दू), जि. 3, स. 30)

अल्लाह पाक पारह 21 सूरतुल अन्कबूत, आयत 64 में इर्शाद फ़रमाता

है :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो, बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मफ़िरत है। (अबु सार)

وَإِنَّ الدَّارَ الْآخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ لَوْ
كَانُوا يَعْلَمُونَ (64)

इरफ़ान : और बेशक आखिरत का घर

ज़रूर वोही सच्ची ज़िन्दगी है। क्या ही

अच्छा था अगर वोह (येह) जानते।

और जो इस (यानी अपनी दुनिया पर आखिरत को बड़ाई देने वाले) दर्जे पर पहुंच जाता है वोह अल्लाह पाक की मुलाक़ात को पसन्द करता है इसी लिये वोह मौत को भी पसन्द करता है। (एहयाउल इलूम (उर्दू), जि. 5, स. 67)

मुझ को अल्लाह से महबूबत है

येह उसी की अता व रहमत है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

मेरी मुलाक़ात के लिये तय्यार हो जा !

अल्लाह पाक ने आसमानी किताबों में इरशाद फ़रमाया : ऐ मेरे बन्दे ! मेरी मुलाक़ात के लिये तय्यार हो जा, अन्क़रीब तू मुझ से मिलेगा। और मेरी इबादत कर क्यूं कि मैं ही तेरा मालिक हूं, वोह शख्स मुझे किस आंख से देखेगा जिस ने मेरी ना फ़रमानी की ? या वोह शख्स किस मुंह से मिलेगा जो मेरी अज़मत शान को भूल चुका है ? वोह बन्दा नुक्रसान में है जिसे मैं अपने दीदार से महरूम कर दूंगा। जब सच्चे बन्दे मेरे करीब होंगे और बद बख़्त मेरी बारगाह से धुत्कार दिये जाएंगे, फिर मैं उन परहेज़गारों पर तजल्ली फ़रमाऊंगा जो मुझे महबूब (यानी प्यारा) रखते हैं। ऐ मेरे बन्दे ! मेरे दरवाज़े पर खड़ा हो जा कि मैं करीम हूं और मेरी पनाह मांग कि मेरा ही रास्ता सीधा है।

(हिकायतें और नसीहतें (तरजमए रौज़ुल फ़ाइज़), स. 95)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा, फ़रिश्ते उस के लिये इस्तिफ़ार (यानी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे।
(طبرانی)

एक रिवायत में है : **अल्लाह** पाक ने दुनिया से इरशाद फ़रमाया : मेरे औलिया के लिये कड़वी बन जा, यहां तक कि वोह मेरी **मुलाक़ात** को पसन्दीदा जानने लगे और मेरे दुश्मनों के लिये मीठी बन जा, यहां तक कि वोह मेरी **मुलाक़ात** को ना पसन्द जानने लगे क्यूं कि मैं ने दुनिया अपने औलिया के लिये कैदखाना और दुश्मनों के लिये जन्नत बनाई है।

(معجم کبیر ج ۱۹ ص ۷ حدیث ۱۱ مختصراً)

गर्चे ज़ाहिर में सूरते गुल है

पर हक़ीक़त में ख़ार है दुनिया

एक झोंके में है इधर से उधर

चार दिन की बहार है दुनिया

काश ! हम भी ऐसी ज़िन्दगी गुज़ारें

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन मौत को वोही पसन्द करेगा जिस ने उस के लिये तय्यारी भी की होगी, मसलन नमाज़ रोज़ों की पाबन्दी और ख़ूब ख़ूब नेकियां की होंगी, सुन्नतों पर अमल करता होगा, नेकी की दावत देता होगा, बुराई से मना करता होगा, अपने दिल में मुसलमान भाइयों और बिलखुसूस ग़रीबों की हमदर्दी व ख़ैर ख़्वाही का जज़्बा रखता होगा, दुख्यारे मुसलमानों के दुख बटाता होगा, झूट, ग़ीबत, चुगली, वादा ख़िलाफ़ी, गाली गलोच, सूद व रिश्वत, फ़िल्मों ड्रामों और गाने बाजों वग़ैरा से बचता होगा। ऐ काश ! हम ऐसी ज़िन्दगी गुज़ारें कि जैसा किसी ने कहा है :

همه خندان بدند و تو گریاں

یاد داری که وقتِ زادَن تُو

همه گریاں شوند و تو خندان

آن چنان زی که وقتِ مُردَن تُو



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : बरोज़े क्रियामत लोगों में से मेरे करीब तर वोह होगा जिस ने दुनिया में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (तर्ज़ी)

से था कि इस का क्या बनेगा ?¹) इतने में मलकुल मौत (عَلَيْهِ السَّلَام) ने अन्दर आने की इजाज़त मांगी तो जिब्रईल (عَلَيْهِ السَّلَام) ने अर्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! येह मलकुल मौत हैं और आप से इजाज़त के तलबगार हैं, इन्हों ने आप से पहले न कभी किसी से इजाज़त मांगी, न आप के बाद किसी से मांगेंगे। नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : इन्हें इजाज़त है। फिर मलकुल मौत आप के सामने बा अदब खड़े हो कर अर्ज़ गुज़ार हुए : **अल्लाह** पाक ने मुझे आप की तरफ़ भेजा है और हुकम दिया है कि आप की फ़रमां बरदारी करूँ, अगर आप मुझे अपनी (मुबारक) रूह ले जाने की इजाज़त देंगे तो मैं ऐसा करूँगा, अगर मना फ़रमाएंगे तो नहीं करूँगा। नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : मलकुल मौत ! तुम ऐसा ही करोगे ? अर्ज़ की : जी हां ! मुझे येही हुकम दिया गया है। हज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام ने अर्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ! **अल्लाह** पाक आप की मुलाकात का मुश्ताक़ है। हुजूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : मलकुल मौत ! जिस बात का तुम्हें हुकम दिया गया है तुम वोह कर लो। चुनान्वे उन्हीं ने आप की रूहे मुबारक क़ब्ज़ कर ली।

(दालल नबुवे ललबिह्ति ज ८ व २११ से خلاص)

खल्क तो क्या कि हैं ख़ालिक को अज़ीज़

कुछ अज़ब भाते हैं भाने वाले

(हदाइक़े बख़्शिश, स. 162)

अल्फ़ाज़ व मअ़ानी : खल्क : मख़्लूक़। **ख़ालिक** : पैदा करने वाला यानी **अल्लाह** पाक। **अज़ब** : अनोखा। **भाना** : पसन्द आना।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा, अल्लाह पाक उस पर दस रहमतें भेजता है। (सं०)

शर्ह कलामे रज़ा : मेरे आक्रा आला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ अपने इस शेर में बड़े प्यारे अन्दाज़ में हुस्नो जमाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का बयान कर रहे हैं, अर्ज़ करते हैं : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! आप इतने हसीनो जमील हैं कि मख़्लूक तो मख़्लूक खुद ख़ालिक़े काएनात (यानी सब ज़हानों को बनाने वाला खुदाए पाक जिस ने आप को भी बनाया है वोह भी) आप से महबूबत फ़रमाता है, आप ऐसे "मुन्फ़रिद" (यानी UNIQUE) महबूब हैं कि ख़ालिक़ व मख़्लूक सब आप से प्यार करते हैं।

या रब्बल मुस्तफ़ा ! हमारी ग़फ़लत दूर हो और हमें तेरी मुलाकात का शौक़ नसीब हो। اللَّهُمَّ آمِينَ بِجَاهِ خَاتِمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

ग़मे मदीना, बक़ीअ, मफ़िरत और बे हिसाब जन्नतुल फ़िरदौस में आक्रा के पड़ोस का तालिब

28 मुहर्रम शरीफ़ 1448 सि.हि.

14-07-2026

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक्रिबात, इज्तिमाअत, आरास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मक्तबतुल मदीना के शाएअ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पैम्फ़लेट तक्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोहफ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मामूल बनाइये, अख़बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने महल्ले के घरों में हसबे तौफ़ीक़ रिसाले या मदनी फूलों के पैम्फ़लेट हर माह पहुंचा कर नेकी की दावत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।



फ़रमाने मुस्तफ़ा : صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शाख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पड़े। (ترمذی)

मआख़िज़ (यानी जिन कुतुब के हवाले इस रिसाले में दिये गए हैं उन के नाम)

مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ	کتاب
مکتبۃ المدینہ	اللہ والوں کی باتیں	دارالکتب العلمیہ بیروت	حلیۃ الاولیاء	مکتبۃ المدینہ	قرآن مجید
مکتبۃ المدینہ	نیکیوں کی جزائیں	دارالانوار بیروت	نوادیر الاصول	دارالمعرفۃ بیروت	تفسیر مدارک
مکتبۃ المدینہ	حکایتیں اور نصیحتیں	دارالکتب العلمیہ بیروت	کنز العمال	مصر	تفسیر خازن
مکتبۃ المدینہ	شرح الصدور (اردو)	دارالکتب العلمیہ بیروت	طبقات	مکتبۃ المدینہ	تفسیر صراط الجنان
مکتبۃ المدینہ	فضائل دُعا	دارالکتب العلمیہ بیروت	دلائل النبوة	دارالکتب العلمیہ بیروت	بخاری
مکتبۃ المدینہ	حدائق بخشش	داراحیاء التراث العربی بیروت	قرۃ العیون	داراحیاء التراث العربی بیروت	معجم کبیر
مکتبۃ المدینہ	ذوقِ نعمت	دارصادر بیروت	احیاء العلوم	دارالکتب العلمیہ بیروت	الزهد
مکتبۃ المدینہ	وسائل بخشش	دارالمعرفۃ بیروت	تنبیہ المغترین	دارالفکر بیروت	فر دوس الاخبار
☆☆☆	☆☆☆	مکتبۃ المدینہ	احیاء العلوم (اردو)	المکتبۃ العصریۃ بیروت	کتاب ذکر الموت

فہرررر

زنوان	سفرہا	زنوان	سفرہا
دुरूد شاریف کی فزلیلات	01	مجازے یسوف السّلام عَلَیْہِ السّلام سے ایمان اکروز مالومات	10
مैं मौत का फ़रिश्ता हूं (वाक्रिआ)	01	मुलाक्रात के शाइकीन के 9 इशादात	11
येह कौन दुआ मांग रहा है ? (वाक्रिआ)	03	अपनी मुलाक्रात नसीब फ़रमा	11
"अल्लाह पाक से मुलाक्रात" के माना	04	सज्दे में वफ़ात	12
मौत को ना पसन्द करने वाले	04	बीबी शावाना की दुआ	12
मौत से एक साल पहले	05	वफ़ात के वक़्त वज्द	12
दीदारे इलाही की दुआ	07	जो सुतून को पहले हाथ लगा दे	13
तसव्वुफ़ की एक तारीफ़	07	मैं मौत को इख़्तियार करूंगा	13
शौके मुलाक्रात पैदा कीजिये	07	क्या तुम मुलाक्रात को पसन्द नहीं करोगे ?	14
हिदायत की अलामत	07	मुलाक्राते इलाही का शौक पैदा करने का तरीका	14
ऐशो राहत का दिन	08	मेरी मुलाक्रात के लिये तय्यार हो जा !	16
मफ़िरत की उम्मीद	08	काश ! हम ऐसी ज़िन्दगी गुज़ारें	17
फूल सूंघने में रूह कबज हो गई	09	अपने मरने की दुआ करना कैसा ?	18
हज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السّلام	09	अल्लाह पाक मुलाक्रात का मुश्ताक़ है	18



फ़ालिज एक्सीडेंट वगैरा से हिफ़ाज़त की दुआ

بِسْمِ اللَّهِ الَّذِي لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَيْءٌ فِي
الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

फ़ज़ीलत: फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ “जो शाख्स रोज़ाना सुबह व शाम तीन तीन बार येह (ऊपर दी हुई) दुआ पढ़े, उसे कोई अचानक मुसीबत नहीं आएगी।” ताबेई बुजुर्ग हज़रते अबान رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं: जिस दिन मुझे फ़ालिज हुवा, उस दिन मैं येह दुआ नहीं पढ़ सका था। (अबू दाऊद हदीस 5088, तिर्मिज़ी हदीस 3399 मुलख़ख़न) “मिरआत” में है: इस दुआ की बरकत से नागहानी (यानी अचानक आने वाली) बीमारी और ज़हरीले जानवर के काटने और दूसरी अचानक (आने वाली) आफ़तों से हिफ़ाज़त रहती है। हां ! दूसरी क्रिस्म की मुसीबत आ सकती है, और मामूली तकलीफ़ें और बीमारियां तो इन्सान को लगती ही रहती हैं। (मिरआत 4/11 से खुलासा) (आधी रात ढले से सूरज की पहली किरन चमकने तक “ सुबह” है और इब्तिदाए वक़्ते ज़ोहर से गुरुबे आफ़ताब तक शाम है)



Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid,
Delhi-110006 ☎ +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi
Post Office, Mumbai-400003 ☎ +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha,
Mirzapur, Ahmedabad-380001 ☎ +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar
Road, Mominpura, Nagpur-440018 ☎ +91-9326310099



www.maktabatulmadina.in



feedbackmmhind@gmail.com



For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) ☎ +91-9978626025